दादा भगवान परिवार का

नवम्बर २०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

माँ, माँगते हैं ऐसी शक्ति जीवन जीएँ नीति से...

माँ लक्ष्मी

संपादकीय

मित्रों,

सभी को हैपी दीवाली और हैपी न्यू ईयर! आप सभी ने इस साल दीवाली पर खूब मौज-मस्ती की होगी और स्वादिष्ट मिठाइयों का आनंद भी लिया होगा। धनतेरस के दिन मम्मी-पापा और घर के बड़ों के साथ मिलकर रिवाज़ के अनुसार लक्ष्मी माँ की पूजा भी की होगी। लेकिन क्या लक्ष्मी माँ सिर्फ धनतेरस के दिन पूजा करने से प्रसन्न हो जाती हैं? या फिर उन्हें प्रसन्न करने का कोई और तरीका भी है?

इस अंक में हम जानेंगे कि लक्ष्मी माँ किस पर प्रसन्न रहती हैं और किस पर नहीं। मन-वचन-काया से की गई चोरियों का क्या फल मिलता है? किसे ढेर सारे पैसे आसानी से मिल जाते हैं? तो चलिए, ऐसी अनेक इन्टरेस्टिंग बातों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के अलावा निसर्ग के रहस्यमयी सफर को भी कन्टिन्यू करेंगे। दीवाली स्पेशल रेसिपी और एक्टिविटी सेक्शन में डिटेक्टिव बनकर केस सॉल्व करने का चान्स भी प्राप्त करेंगे। तो तैयार?

- डिम्पल भाई मेहता

वर्ष : १२ अंक : ७
अखंड क्रमांक : १०४
नवम्बर २०२१

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६९१६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी जी के क्या नियम हैं?

दादाश्री : लक्ष्मी देवी कहती हैं, 'मैं किस पर प्रसन्न होती हूँ? जो मेरे नियमों का पालन करता है उस पर।' यदि मन, वाणी और वर्तन से चोरी न की जाए तो लक्ष्मी जी बहुत प्रसन्न होती हैं।

प्रश्नकर्ता : मन, वाणी और वर्तन से चोरी यानी क्या?

पूज्यश्री : मन से चोरी यानी क्या? हमारी सहेली स्कूल में अच्छा सा पर्स लाई हो और उसके पर्स में हमने देखा कि कोई अच्छी चीज़ है, अच्छी बॉलपेन है, तो मन में ऐसा हुआ कि "कोई देख नहीं रहा। चलो, मैं ले लेती हूँ।" मन में विचार आया कि 'ले लेती हूँ', यह मन से चोरी की कहा जाएगा। चोरी का विचार आने पर पछतावा नहीं होता बल्कि किसी की चीज़ ले लेना अच्छा लगता है, यह मन से चोरी कर ली कहा जाएगा। यदि बोलकर व्यक्त करता है कि "इन पैसे वालों को तो लूटना चाहिए। अनीति करनी चाहिए, बेईमानी करनी चाहिए। सभी करते हैं। हम क्यों नहीं करें?" यह वाणी से चोरी करने के बराबर हो गया। और यदि वास्तव में मिलावट करके लोगों को धोखा देता है, तो उसे वर्तन से चोरी करना कहा जाता है।

इस जन्म में हमें लक्ष्मी (पैसों) की कमी क्यों बनी रहती है? क्योंकि पिछले जन्म में मन से, वाणी से या वर्तन से चोरी की है। दादाजी कहते हैं "एक जन्म नीति और ईमानदारी से काम करो, चोरी मत करो, किसी को धोखा मत दो, किसी के साथ विश्वासघात मत करो, तो अगले जन्म के लिए सेफसाइड हो जाएगी।"

ज्ञानी कहते हैं...

यह तो नई

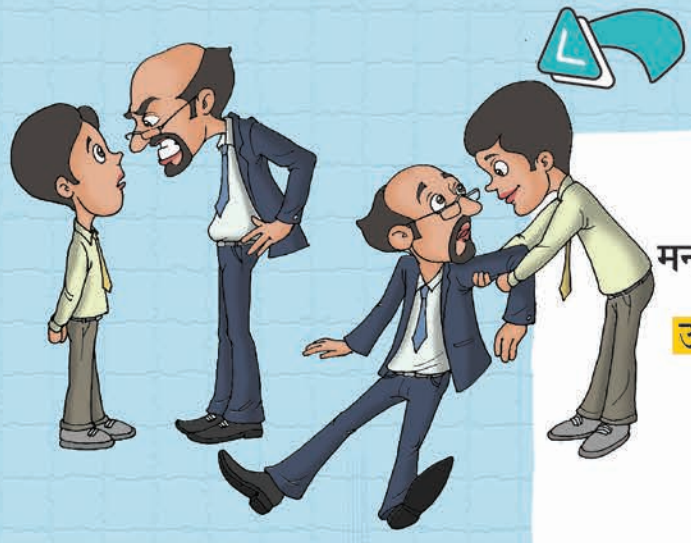

मेहनत करने से कमाई नहीं होती।
मन बड़ा (उदार) रखने से कमाई होती है।

उदा : जिसका मन बड़ा (उदार) होता है, वह दूसरों की खुशी के लिए अपनी खुशी का त्याग कर देता है। वह अपने साथ बुरा करने वालों को भी उनके मुसीबत के समय दिल से मदद करता है।

लक्ष्मी जी का क्या नियम है? जितना हम किसी को देते हैं उससे तीन गुना ज्यादा हमें वापस मिलता है।

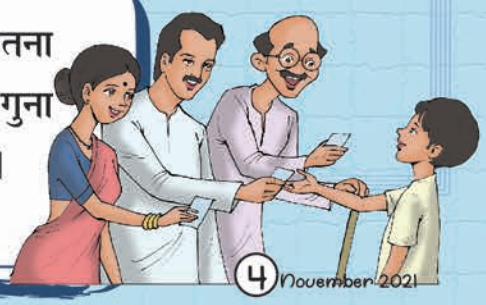

ही बात है!

जिसे लक्ष्मी जी (पैसों) की इच्छा ही नहीं होती उसके यहाँ ढेर सारे पैसे सामने से चलकर आते हैं।

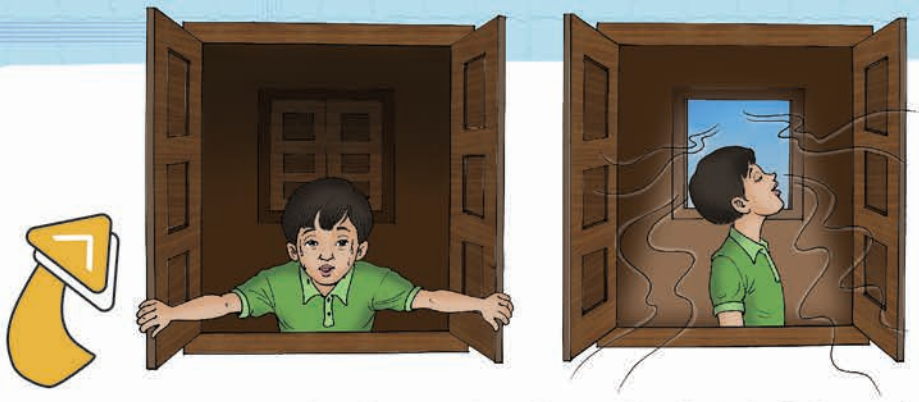

पहले तुम (लक्ष्मी) दो, बाद में तुम्हें (लक्ष्मी) मिलेगी ये नियम है।

उदा : किसी बंद रूम में गर्मी हा रही हो और बाहर हवा चल रही हो तो जब हम एक खिड़की खोलते हैं तो बाहर की हवा अंदर नहीं आती। लेकिन अगर हम पीछे की खिड़की भी थोड़ी सी खोल देते हैं तो हवा तेज़ी से अंदर आने लगती है। हवा के बाहर निकलने की जगह होते ही हवा अंदर आने लगती है।

रहस्यमयी सफर

(पिछले अंक में हमने देखा कि अंबा माँ का आशीर्वाद लेकर निसर्ग आगे बढ़ा। तभी उसे हीरे एवं रत्नजड़ित एक दरवाज़ा दिखा।)

हीरे एवं रत्नजड़ित दरवाज़ा देखते ही निसर्ग ने सोचा, "ओहोहो... कितने कीमती रत्न!! इनमें से मुझे कुछ रत्न मिल जाएँ तो कितना मज़ा आ जाए!"

निसर्ग अपने ख़यालों में खोया हुआ था कि तभी दरवाज़ा खुला। एक सोनपरी ने उसे अंदर बुलाया। उसका स्वागत करते हुए सोनपरी ने कहा, "मनपसंद कपड़े पहनकर हो जाओ तैयार, जल्दी करो, नहीं तो रह जाओगे बाहर।"

सामने जो कुछ भी दिखाई दिया उसे देखकर निसर्ग की आँखें खुली की खुली रह गई। एक से बढ़कर एक कीमती वस्त्र रखे हुए थे। एक बार तो निसर्ग को ऐसा लगा कि वह एक के ऊपर एक ऐस दो-तीन वस्त्र पहन ले। लेकिन नियम के अनुसार वह एक ही वस्त्र पसंद कर पाया। सोने के वस्त्र पहनकर उसने मन में सोचा, "ये वस्त्र मैं अपने साथ घर ले जाऊँगा। और फिर मैं पैसे वाला बन जाऊँगा।"

और भी ज्यादा अच्छी चीज़ें पाने की आशा के साथ निसर्ग आगे बढ़ा। उसे वहाँ एक रुपहला कुआँ दिखाई दिया। उस पर रुपहले अक्षरों में लिखा था : "एक दो, अनेक पाओ।"

यह पढ़कर निसर्ग सोचने लगा कि, 'क्या देने की बात हो सकती है?' और उसके बदले में क्या मिलेगा? किसे दूँ? ऐसे सोचते-सोचते आगे बढ़ते हुए निसर्ग को ठोकर लग गई और एक सिक्का उसकी जेब में से उछलकर कुएं में गिर गया।

निसर्ग को आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि खननन करके सोने के दस सिक्के कुएं में से बाहर निकले।

"अच्छा। 'एक दो, अनेक पाओ' का यह अर्थ था।" निसर्ग को समझ में आया। और भी अधिक सिक्के किस तरह प्राप्त किए जाए उसके बारे में वह सोचने लगा। उसने जेब में हाथ डालकर देखा तो जेब में नौ सिक्के थे। खुश होने के बजाय उसे इस बात का दुःख हुआ कि सिर्फ इतने ही सिक्के उसके पास हैं। नौ के बदले नब्बे सिक्के होते तो!! फिर भी उसने दुःखी होकर वे नौ सिक्के कुएं में डाल दिए और कुएं ने ढेर सारे चमकते सोने के सिक्के निसर्ग को वापस दिए।

तभी फिर से एक सोनपरी निसर्ग के सामने आई और खुशी से बोली, "ओहोहो... अब तो तुम अमीर बन गए! तुम इतनी सारी लक्ष्मी का क्या करोगे?"

"पहले मैंने सोचा कि मैं अपने दोस्त मनन को उसके पैसे वापस दे दूँ जो मैंने उससे कुछ महीने पहले लिए हैं। लेकिन फिर मैंने सोचा कि मनन तो खुद कितना पैसे वाला है। और फिर उसने मुझसे पैसे माँगे भी नहीं हैं तो मैं क्यों उसे पैसे वापस करूँ?"

तो तुम ये सोच रहे हो कि तुम मनन को पैसे वापस नहीं करोगे?!!! ऐसा सोचने में बहुत जोखिम है!! आगे तुम्हारी मर्जी" कहकर सोनपरी वहाँ से उड़ गई।

निसर्ग को सोनपरी की बात अच्छी नहीं लगी। और अधिक धन प्राप्त करने की लालच से

उसने खुद के पास जितने भी सिक्के थे वे सभी कुएं में डाल दिए और इंतज़ार करने लगा। थोड़ी देर इंतज़ार करने पर भी कुएं ने कुछ नहीं दिया तो वह रोने लगा।

रोते हुए जब उसका ध्यान अपने कपड़ों पर गया, तो उसे दूसरा आघात लगा।

"नहीं... नहीं। मैंने तो सोने के कपड़े पसंद किए थे!!" निसर्ग कपड़े उतारने का प्रयत्न करने लगा। निसर्ग के सोने के कपड़े सादे कपड़ों में बदल गए थे।

जैसे उसका सबकुछ खो गया हो इस तरह दुःखी होकर निसर्ग सिर पर हाथ रखकर बैठ गया।

तभी चारों ओर सुनहरी किरणें फैल गईं और तेजस्वी स्वरूप लक्ष्मी माँ वहाँ प्रकट हुईं।

लक्ष्मी माँ का रूप देखकर दो मिनट के लिए निसर्ग सबकुछ भूल गया और उसने देवी माँ को प्रणाम किया।

देवी माँ ने उसे आशीर्वाद दिया और उसकी उदासी का कारण पूछा।

निसर्ग ने रोते हुए अभी तक जो कुछ उसके साथ हुआ था वह विस्तार से बता दिया।

निसर्ग की बात सुनकर देवी माँ को हँसी आ गई। हँसते हुए देवी माँ ने पूछा, "जो मिला उसमें तुम्हें संतोष था? तुम्हें जो कुछ भी मिला उसका उपयोग तुम अच्छे काम में करोगे ऐसा तय किया था?"

निसर्ग सोचने लगा, "पहले तो

मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं। आज तक मैंने सिर्फ कुछ पाने का ही सोचा है। जितना पाया हो उससे और ज्यादा पाने की इच्छा रहती है।" निसर्ग ने सिर हिलाकर 'ना' कहा।

देवी माँ ने आगे पूछा, "क्या तुमने यहाँ के नियमों का पालन किया है? क्या तुमसे मन-वचन-काया से चोरी हुई है?"

निसर्ग ने तुरंत जवाब दिया, "नहीं, मैंने कोई चोरी नहीं की है!"

देवी माँ ने प्रेमपूर्वक कहा, "सिर्फ किसी की चीज़ ले लेना ही चोरी नहीं है। लेकिन मन और वाणी से भी चोरी होती है। भले ही तुम कोई चीज़ ले नहीं लेते हो लेकिन मन से भी कोई चीज़ ले लेने का विचार करते हो तो वह चोरी ही कही जाती है। और यदि कोई चीज़ लेते नहीं हो लेकिन सिर्फ ऐसा बोलते हो कि ले लेने में हर्ज नहीं है, तो यह वाणी से चोरी की कही जाती है। क्या तुमने ऐसा किया है?"

निसर्ग को याद आया कि उसने सोचा था कि वह सोने के वस्त्र अपने साथ ले जाएगा और सोनपरी के साथ की बातचीत में उसने अपने दोस्त मनन से लिए पैसे वापस नहीं देने की बात कही थी। निसर्ग को अपनी गलती समझ में आई और उसे अपनी गलती पर पछतावा भी हुआ।

देवी माँ ने कहा, "यदि ऐसी चोरियाँ होती हैं तो मुझे बहुत दुःख होता है और मेरा तेज कम होने लगता है। लेकिन तुम्हारे जैसे बच्चों को जब अपनी गलती पर पछतावा होता है तब मेरा तेज फिर से फैलने लगता है। तुम्हें अपनी गलती पर पछतावा है इसलिए सामने जो कुछ दिख रहा है, वह सब तुम मेरी ओर से गिफ्ट के तौर पर ले जाओ।"

निसर्ग ने सामने देखा तो कीमती रत्न और आभूषण रखे थे। उसने सिर्फ एक हार लिया और देवी माँ से कहा, "यह हार मैं अपनी दीदी को दूँगा।"

देवी माँ ने पूछा, "और तुम अपने लिए क्या लोगे?"

"मुझे इसमें से बहुत कुछ ले जाने की इच्छा हो रही है। लेकिन ऐसा विचार भी आ रहा है कि यह सब तो थोड़े दिनों में

खत्म हो जाएगा। इसके बजाय आप ही मेरे साथ चलो न!"

निसर्ग की बात से देवी माँ खुश हो गईं और आशीर्वाद दिया, "यदि तुम मेरे नियमों का पालन करोगे तो मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।"

देवी माँ का आशीर्वाद प्राप्त करके निसर्ग खुश हो गया और दीदी को हार दिखाने के लिए दौड़ा, "दीदी, देखो मैं आपके लिए क्या लाया हूँ! जल्दी आओ।"

"निसर्ग, निसर्ग... क्या हुआ? तू मेरे लिए क्या लाया है?"

दीदी, दीदी... कहते हुए अचानक निसर्ग की आँखें खुल गईं। उसने देखा तो सामने उसकी दीदी खड़ी थीं और वह बिस्तर पर सोया था।

'निसर्ग, जल्दी तैयार हो जा। आज हमारे घर देवी माँ की पूजा है। याद है न तुझे? प्लीज़, हर बार की तरह आनाकानी मत करना।'

निसर्ग को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, 'पहले देखा था वह सपना था? या अभी देख रहा हूँ वह सपना है?!' निसर्ग ने आँखें मलीं और इधर-उधर देखने लगा। कुछ देर बाद उसे समझ में आया कि वास्तव में उसने सपना ही देखा था "भले ही वह सपना था, लेकिन आज मुझे जो समझ मिली है मैं उसके अनुसार ही जीवन जीऊँगा और देवी माँ को प्रसन्न रखूँगा।"

निसर्ग ने दीदी को आवाज़ लगाकर कहा, 'दीदी, आप पूजा की तैयारी करो। मैं तैयार होकर आ रहा हूँ।'

दीदी निसर्ग के शब्दों को आश्चर्यचकित होकर सुन रही थीं!!

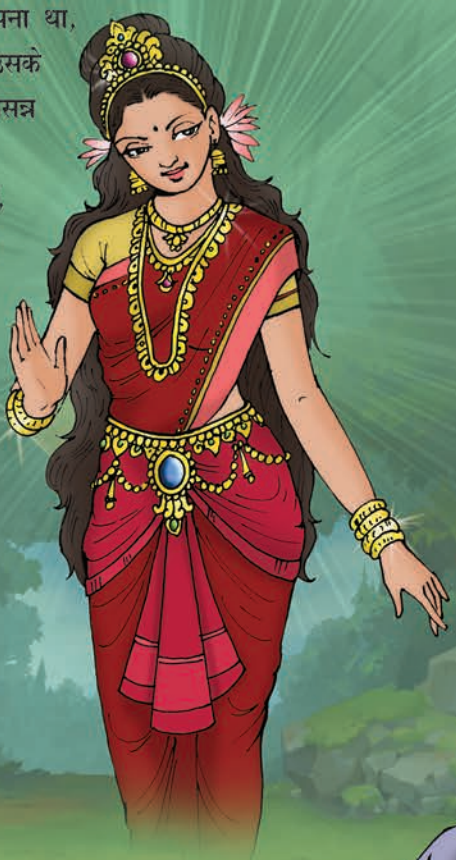

Fun Fair Detective Activity

आदित्य अपने दोस्त जिमी, मोन्टु और रिया के साथ फन फेयर में गया है। फन फेयर में सभी दोस्त साथ में मिलकर मज़ा कर रहे हैं। लेकिन कहीं-कहीं चोरियाँ भी हो रही हैं। तो आप अपनी डिटेक्टिव हैट पहनकर पहचानो कि मन-वचन-काया से चोरियाँ कहाँ हुई हैं और उस पिक्चर पर सर्कल करो।

मैं आज सभी राइड में बैठूँगी।
यह किसी के गिर गए हैं, वैसे भी उसे मिलेंगे नहीं और धूल में पड़े खराब हो जाएँगे। इससे तो अच्छा है मैं ले लूँ।
मोन्टु राइड में गया है, इतनी देर में मैं उसके पॉपकॉर्न खा लेता हूँ बाद में मेरे पॉपकॉर्न खाऊँगा।
इतनी बड़ी लाइन है, कब बारी आएगी?

सही कहते थे डैडी...

प्लेन टेक ऑफ (उड़ने) की तैयारी में था। विंडो सीट की खिड़की से बाहर देखते हुए मैंने भूतकाल में एक नज़र डाली।

दस साल पहले की यह बात है। तब मैं दस साल का था। मैं रोज़ की तरह काग़ज़ के प्लेन से खेल रहा था।

पढ़ाई के समय शरारत क्यों कर रहा है मार्क? क्रिसमस की छुट्टियों में हमें स्नो (बर्फ) देखने नहीं जाना?

यस मम्मा। आइ कान्ट वेट फॉर इट। मुझे तो रोज़ रात को सपने में भी स्नो (बर्फ) दिखाई पड़ता है।

ओके, ओके... ड्रीम की बातें बंद कर और पढ़ने बैठ।

बस, एक लास्ट बात कहूँ मम्मा? मैंने पिगी-बैंक में रिमोट कंट्रोल वाला एरोप्लेन खरीदने के लिए पैसे सेव किए हैं।

मम्मा, एक दिन ऐसा आएगा जब मैं रियल एरोप्लेन में बैठकर अमेरिका जाऊँगा। पढ़-लिखकर खूब पैसे कमाऊँगा और फिर आपको वहाँ बुलाऊँगा।

तभी डैडी आ गए।

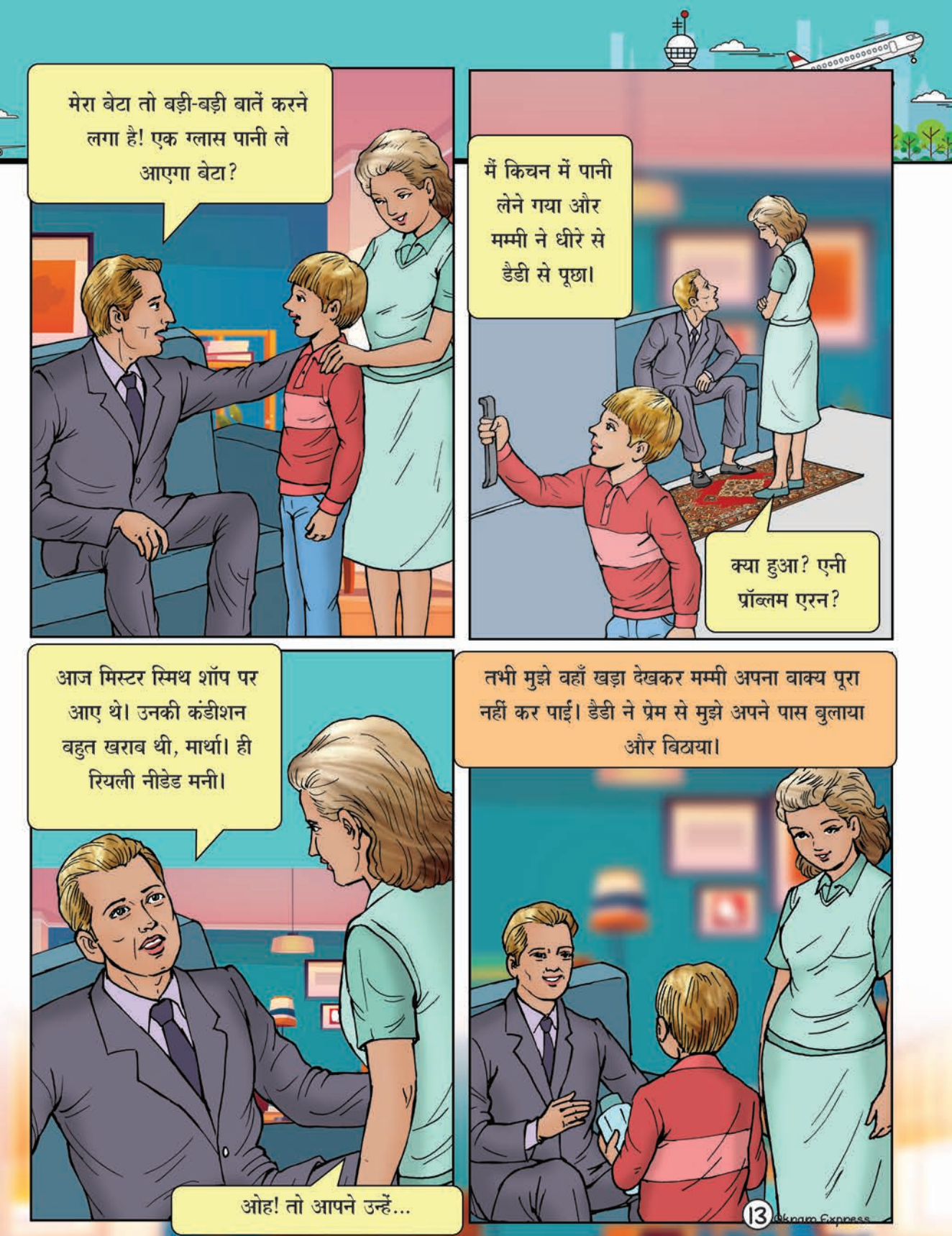

मेरा बेटा तो बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है! एक ग्लास पानी ले आएगा बेटा?
मैं किचन में पानी लेने गया और मम्मी ने धीरे से डैडी से पूछा।
क्या हुआ? एनी प्रॉब्लम एरन?
आज मिस्टर स्मिथ शॉप पर आए थे। उनकी कंडीशन बहुत खराब थी, मार्था। ही रियली नीडेड मनी।
ओह! तो आपने उन्हें...
तभी मुझे वहाँ खड़ा देखकर मम्मी अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाईं। डैडी ने प्रेम से मुझे अपने पास बुलाया और बिठाया।

मार्क, मिस्टर स्मिथ बहुत ही ओल्ड हैं। उनके बेटे को बिज़नेस में बहुत बड़ा लॉस हुआ है। हम वेकेशन में शो देखने जाने के बदले उन पैसों से मिस्टर स्मिथ की हेल्प करें तो?

मैं निराश हो गया। डैडी ने समझाया...

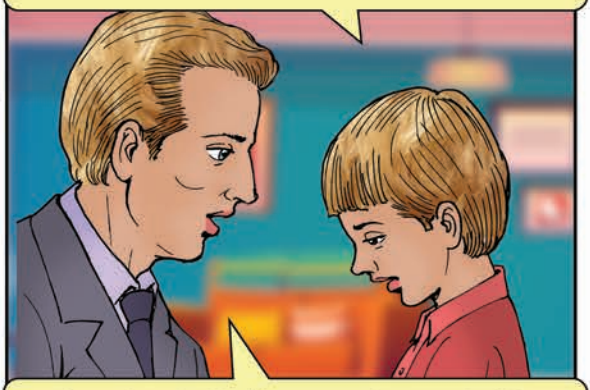

हमें घूमने जाने के और बहुत सारे चान्स मिलेंगे लेकिन मिस्टर स्मिथ को हेल्प करने का यह एक ही चान्स है।

मार्क, मिस्टर स्मिथ की हेल्प करके हम सारी दुनिया तो नहीं बदल सकते लेकिन मिस्टर स्मिथ की दुनिया तो ज़रूर बदल सकते हैं।

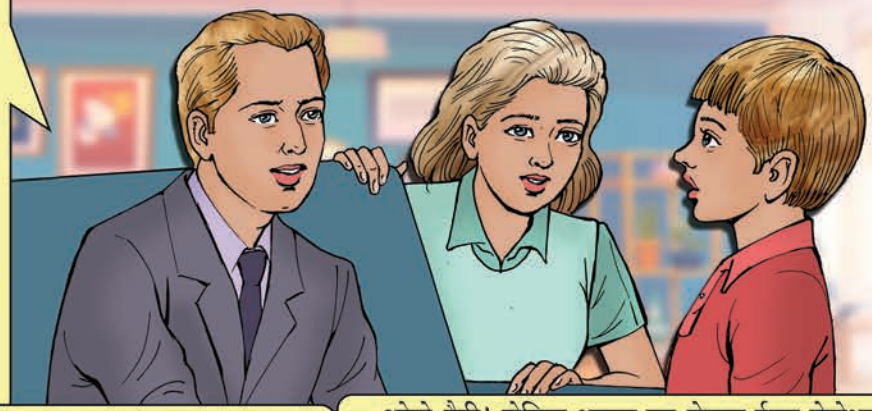

मुझे वेकेशन में घूमने तो जाना ही था लेकिन मिस्टर स्मिथ को हेल्प करने का चान्स मिस करके नहीं।

ओके डैडी। लेकिन शायद हम नेक्स्ट ईयर वेकेशन में घूमने जा सकेंगे?

वी विल ट्राइ आवर बेस्ट, मार्क।

अमेरिका की वर्जीनिया टेक यूनिवर्सिटी के एरोनोटिकल इंजीनियरिंग प्रोग्राम का एडमिशन लेटर मेरे हाथ में था। डैडी खुश हुए, लेकिन साथ ही चिंता के बादल उनके चेहरे पर छा गए।

डैडी को देने के लिए मेरे पास कोई आन्सर नहीं था। मेरा निराश चेहरा देखकर डैडी समझ गए।

अचानक उस रात...

जिस व्यक्ति ने पूरी ज़िंदगी दूसरों को हेल्प ही की हो, तो जब उसे ज़रूरत हो तब हेल्प कैसे न मिले! उस रात,

अंकल, यह कोई हेल्प नहीं है। मेरे डूबते हुए बिज़नेस को आपने बचाया था, उसी बिज़नेस में बहुत प्रॉफिट हुआ है। आपका ही हिस्सा आपको चुका रहा हूँ।

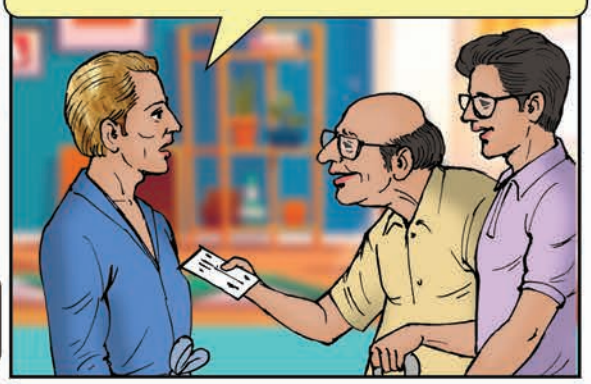

और फीस, एयर टिकिट आदि सभी की व्यवस्था हो गई। खिलौने का एरोप्लेन खरीदने के लिए पिगी-बैंक में सेव किए पैसे, दूसरों को हेल्प करने के लिए खर्च करके आज मैं उन्हीं पैसों से एरोप्लेन में बैठकर एरोप्लेन इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने जा रहा हूँ।

सही कहते थे डैडी, दूसरों की मदद करके हम अपनी ही मदद करते हैं। जितना दूसरों को देते हैं, उससे कई गुना ज्यादा हमें वापस मिलता है।

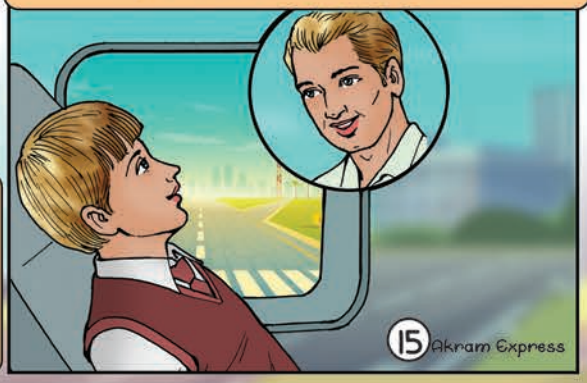

मीठी यादें...

यह १९८७ की बात है। अमेरिका से वापस लौटने के बाद नीरू माँ दादा के साथ मुंबई से बड़ौदा जा रहे थे। देहविलय के पहले दादा की यह अंतिम यात्रा थी। इस यात्रा के ढाई महीने बाद दादाश्री का देहविलय हो गया। दादाश्री के पैसे और खर्च का हिसाब नीरू माँ रखते थे। नीरू माँ सब प्रोपरली लिखकर रखते और हर ३-४ महीने के बाद दादा को खर्च के विवरण के साथ पूरा हिसाब दिखा देते थे। मुंबई से बड़ौदा की यात्रा के दौरान नीरू माँ ने दादा को प्लेन ट्रावेल के टिकिट का खर्च वगैरह का हिसाब दिखाया। दादा ने सब देखा। फिर नीरू माँ से कहा, "नीरू बहन, इस खर्च में मेरी टिकिट के पैसे लिखे हैं। लेकिन आपकी टिकिट के पैसे क्यों नहीं लिखे? यदि आप मेरे पैसों में से अपनी टिकिट के पैसे ले लेते हो तो इसमें क्या हर्ज है?"

नीरू माँ ने तुरंत जवाब दिया, "आपने कहाँ कभी मेरे (पैसे) लिए हैं, दादा?"

दादा ने प्रेम से कहा, "बेटियों से पैसे लिए जाते हैं कभी! नहीं लिए जाते।"

"दादा, आपसे ही तो सीखा है। आपने ही सिखाया है न, प्योरिटी से रहना। सभी को अपना खुद का खर्च खुद ही उठाना चाहिए, दूसरे से नहीं लेना चाहिए। दादा आपने ही तो प्योरिटी से जीना सिखाया है। फिर मैं कैसे ले लूँ!" नीरू माँ ने दादा से कहा।

> "दादा बहुत खुश हुए और कहा, "ठीक है। मत लेना। बहुत अच्छी तरह से प्योरिटी सीख गए आप!""

The Little Chef

Oreo Balls

आवश्यक सामग्रीः

१. ओरीयो बिस्कुट - १० की संख्या में
२. दूध - २ चम्मच
३. चॉकलेट सिरप
४. ड्राईफ्रुट्स का चूरा

बनाने का तरीकाः

ओरीयो बिस्कुट से क्रीम निकालकर अलग रखें।

ओरीयो बिस्कुट को चूरा करके उसमें दूध डालकर बॉल्स बनाएँ जा सकें ऐसा मिश्रण तैयार करें।

तैयार मिश्रण के समान मात्रा में आठ भाग करें और अलग निकाले हुए क्रीम के भी आठ बॉल्स बनाएँ।

ओरीयो बिस्कुट के एक भाग को हथेली में लेकर फैलाएँ। उसमें एक क्रीम बॉल रखकर लड्डू का शेप दें।

सभी बॉल्स इसी तरह तैयार करके चॉकलेट सिरप में डीप करके प्लेट में रखें। ड्राईफ्रुट्स के चूरे से डेकोरेट करें।

दीवाली में लक्ष्मी माँ के पूजन के लिए यह स्वीट ज़रूर बनाएँ।

धनतेरस की सुबह...

दीवाली पर रेयांश, रीदय और अनन्या, तीनों कज़िन्स अपने बड़े पापा के यहाँ इकट्ठे हुए हैं। रेयांश और रीदय हमेशा अनन्या के साथ अलग-अलग बातों में कॉम्पीटिशन करते और हर बार हार जाते।

चलो देखते हैं, धनतेरस के दिन सुबह ७:३० बजे तीनों के बीच कौनसी प्रतियोगिता चल रही है?!

अनन्या, चल न, दीवार बम पटाखे फोड़ने चलते हैं। आज तो हम तुझे हरा ही देंगे।

तुम लोग जाओ। मैं तो पूजा करके देवी-देवता, लक्ष्मी माँ, सरस्वती माँ, गौतम स्वामी, सीमंधर स्वामी और दादा भगवान के आशीर्वाद लूँगी।

इतने सारे भगवान के आशीर्वाद लेने से क्या होगा? क्या दीवार बम पटाखे और अधिक अच्छे से फूँटेंगे?

अरे, क्या तुम्हें पता नहीं है कि हमारे बड़े-बुजुर्ग धनतेरस के दिन लक्ष्मी जी की पूजा करके बिज़नेस शुरू करते हैं?

यह तो पता है। लक्ष्मी माँ के आशीर्वाद से बहुत सारे पैसे मिलते हैं। आज मैं भी उनसे बहुत सारे पैसे माँगूँगा।

लक्ष्मी जी से नीति और ईमानदारी माँगनी चाहिए। यदि हम ऑनेस्टी से रहते हैं तो पैसे तो बाइ-प्रोडक्शन में मिल जाते हैं!

बाइ-प्रोडक्शन में यानी?

यदि तुम तय करते हो कि तुम्हें मन-वचन-काया से चोरी नहीं करनी है और किसी को दुःख नहीं देना है तो यह तुम्हारा मेन-प्रोडक्शन कहा जाएगा। ऐसा करने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं और तुम्हें अपने आप ही बाइ-प्रोडक्शन में लक्ष्मी (पैसे) मिलती रहती है।

मैं तो वैसे भी कभी चोरी नहीं करता।

भले ही तुम पटाखे चोरी करके नहीं फोड़ते हो लेकिन अगर मन में सोचते हो कि, "इसके पास कितने सारे पटाखे हैं। पहले मैं इसके थोड़े पटाखे फोड़ लेता हूँ। फिर अपने पटाखे फोड़ूँगा।" तो इसे भी चोरी कहा जाता है।

ओह! ऐसा? तो अब से मैं हर साल धनतेरस के दिन पूजा करूँगा और लक्ष्मी जी से ईमानदार बनने की शक्ति माँगूँगा।

तो मित्रों, रीदय, रेयांश और अनन्या रोज लक्ष्मी जी से प्रार्थना करेंगे। यदि आप धनतेरस के दिन पूजा करना चूक गए हों तो कोई बात नहीं, लेकिन आज से ऐसा करोगे न कि लक्ष्मी जी प्रसन्न रहें?

Akram Express
November 2021
Year : 12, Issue : 7
Conti. Issue No.: 104
BALVIGNAN
Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

और अंत में...

लिली नामक एक गरीब महिला ने ब्याज पर पैसे लेकर फलों का ठेला लगाया। उस समय उसके गाँव में स्वामीनारायण मंदिर की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम था। लिली ने सोचा था कि इस अवसर पर अच्छी कमाई हो जाएगी। दो घंटे अच्छी बिक्री हुई और फिर ठेला-खोमचा हटाने के लिए पुलिस आ गई। सेवक भी वहाँ आ गए। लिली ने वहाँ से हटने से इनकार कर दिया। जब सेवकों ने हाथ जोड़कर लिली से विनती की तब उसने उनको रुपयों से भरा बटुआ दिखाया। बटुए में सात हज़ार रुपये थे।

लिली ने बताया, "भाइयों, किसी गोरी विदेशी महिला ने मेरे ठेले से पचास रुपये के फल खरीदे और वह महिला अपना बटुआ यहीं ठेले पर भूलकर चली गई। अब अगर मैं अपना ठेला यहाँ से हटा लेती हूँ और यदि वह महिला अपना बटुआ ढूँढते हुए यहाँ आती है तो मैं उसे नहीं मिलूँगी। तो उस बेचारी का क्या होगा? इसलिए वह आकर अपना बटुआ ले जाए तब तक मुझे यहाँ रहने दें।"

गरीब महिला की कितनी ग़ज़ब की ईमानदारी! पैसों की ज़रूरत होते हुए भी न तो उसने किसी और के पैसे अपने पास रखे और न ही पैसे रखने का विचार किया! लक्ष्मी माँ ऐसे लोगों पर अवश्य ही मेहरबान होती हैं! जब यह बात प्रमुख स्वामी महाराज को पता चली तब महाराज ने प्रसन्न होकर लिली को दो हज़ार रुपये पुरस्कार के तौर पर दिए।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेवल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेवल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025